डॉ. ऋषिका वर्मा

श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान: समस्त समस्याओं का एक समाधान

जीवन जीने की दिव्यतम-भव्यतम कल्पना का साकार रूप ही श्रीमद्भगवद्गीता है। जीवन की ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान गीता से न प्राप्त किया जा सके। गीता अर्जुन के समक्ष अवश्य गायी गई लेकिन केवल अर्जुन के लिए नहीं गायी गई। भगवान श्रीकृष्ण ने गायी ताकि हम जीवन में समत्व को धारण करते हुए लाभ-हानि में, सुख-दुःख में और सम-विषम परिस्थितियों में आनंदपूर्वक जी सकें।

वर्तमान समय में मनुष्य जीवन की बहुत सारी समस्याओं से पीड़ित है। मनुष्य केवल अभाव से दुःखी नहीं है अपितु अपने स्वभाव से दुःखी है। वो दुःखी है, खिन्न है, विषादग्रस्त है लेकिन इन सबके पीछे के कारणों से भी अनभिज्ञ है। गीता रोग भी बताती है, औषधि भी बताती है और मानव मन का उपचार भी करती है। हमारे जीवन का विषाद, प्रसाद बन जाये यही तो गीता जी के आश्रय का फल है। भगवद्गीता, भारतीय दर्शन, आध्यात्म और जीवन जीने की कला का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह महाभारत के भीष्मपर्व के अंतर्गत आता है और भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद का संकलन है। गीता न केवल धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह मानव जीवन के गूढ़ रहस्यों को उजागर करती है और जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान का मार्ग दिखाती है भगवद्गीता को जीवन का दिशा-निर्देश माना जाता है। यह कर्म, ज्ञान, और भक्ति के माध्यम से जीवन के उद्देश्य को समझने में मदद करती है। गीता यह सिखाती है कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन निष्काम भाव से करना चाहिए, अर्थात् फल की चिंता किए बिना कार्य करना चाहिए। गीता का सबसे प्रसिद्ध श्लोक "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" यह सिखाता है कि व्यक्ति का अधिकार केवल कर्म पर है, उसके परिणाम पर नहीं। यह संदेश हर परिस्थिति में मन को शांत रखने और संघर्षों का सामना करने की प्रेरणा देता है। गीता धर्म और अधर्म के बीच का अंतर समझाती है। यह बताती है कि धर्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करना, सत्य और न्याय का साथ देना भी धर्म है। अर्जुन के माध्यम से गीता यह स्पष्ट करती है कि अपने धर्म और कर्तव्य से विमुख होना जीवन का उद्देश्य नहीं हो सकता। आधुनिक जीवन की तनावपूर्ण परिस्थितियों में भगवद्गीता मानसिक शांति प्रदान करने का मार्ग दिखाती है। इसमें ध्यान (ध्यानयोग) और आत्मनिरीक्षण के महत्व को बताया गया है। यह व्यक्ति को अपने अंदर झांकने और आत्मज्ञान प्राप्त करने में सहायक है। गीता में भक्ति

को जीवन का आधार बताया गया है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो व्यक्ति ईश्वर पर पूर्ण विश्वास और समर्पण करता है, उसे किसी प्रकार का भय या चिंता नहीं होती। भक्ति न केवल मन को शांत करती है, बल्कि ईश्वर के साथ व्यक्ति के संबंध को भी प्रगाढ़ बनाती है। भगवद्गीता न तो किसी विशेष धर्म से बंधी है, न ही किसी जाति, वर्ग या समाज के लिए आरक्षित है। इसमें दिए गए सिद्धांत सार्वभौमिक हैं और हर युग, हर समय और हर व्यक्ति के लिए प्रासंगिक हैं। यह आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, और जीवन के चक्र को समझाती है। गीता यह स्पष्ट करती है कि शरीर नश्वर है, लेकिन आत्मा अमर है। आत्मा कभी मरती नहीं, बल्कि केवल शरीर रूपी वस्त्र को बदलती है। यह सिद्धांत जीवन और मृत्यु के भय को समाप्त करता है और व्यक्ति को सच्चे आत्मज्ञान की ओर प्रेरित करता है। गीता में दिए गए सिद्धांत आज के समय में प्रबंधन और नेतृत्व के लिए भी प्रेरणा देते हैं। यह बताती है कि एक नेता को निष्पक्ष, निःस्वार्थ और आत्मविश्वासी होना चाहिए। एक अच्छा प्रबंधक वही है जो टीम के हितों को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखे। आधुनिक युग में जब लोग तनाव, असंतोष, और भटकाव का सामना कर रहे हैं, गीता उनके लिए एक दीपस्तंभ की तरह है। यह आत्मा, मन, और शरीर के बीच के संबंध को समझाती है और जीवन को संतुलित बनाने के लिए प्रेरित करती है। गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है; यह एक ऐसा शास्त्र है जो जीवन के हर पहलू पर गहन विचार प्रस्तुत करता है। यह दर्शन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, और प्रबंधन के क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान देता है।

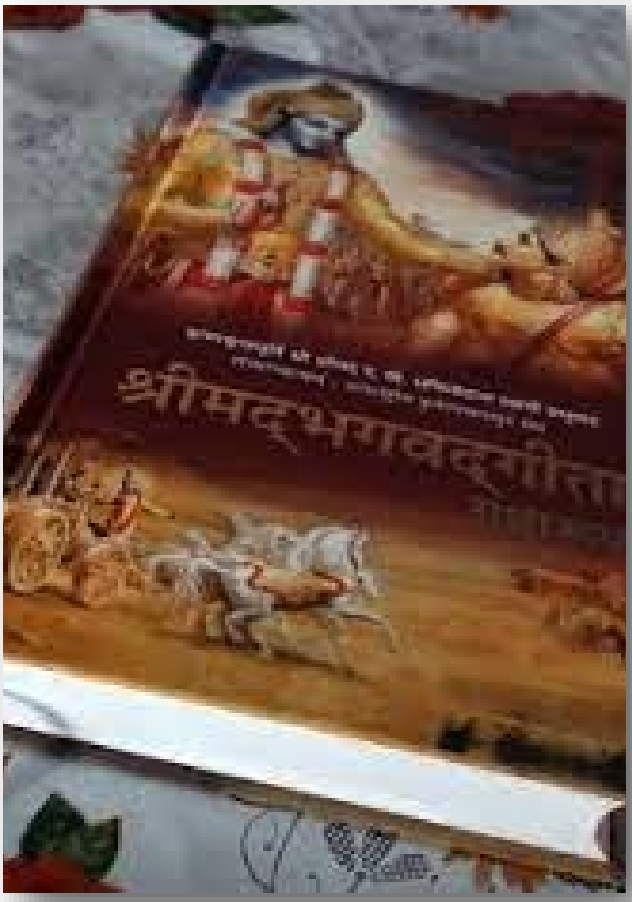

भगवद्गीता केवल एक पुस्तक नहीं है, बल्कि यह जीवन का दर्शन है। यह हमें सिखाती है कि जीवन के कठिनतम समय में भी हमें अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सच्चाई और धर्म का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। यह आत्मविश्वास, मानसिक शांति, और आध्यात्मिक उन्नति का अद्भुत स्रोत है। गीता का महत्त्व हर काल और युग में अटल है और यह मानव जीवन को नई दिशा देने की क्षमता रखती है।